



# Gainer Academy

**CLASS - 11TH**

## Psychology ( मनोविज्ञान )

### Chapter - 4

### Human Development

### मानव विकास



[www.gaineracademy.in](http://www.gaineracademy.in)



Gainer Academy





Date.....1.....

## Lesson - 4

## मानव विकास

- विकास का अर्थ : विकास गतिशील , क्रमबद्ध तथा पूर्वकथनीय परिवर्तनों का प्रारूप है जो गर्भाधान से प्रारंभ होता है तथा जीवनपर्यंत चलता रहता है ।
  - विकास में मुख्यता संवृद्धि एवं हास जो वृद्धावस्था में देखा जाता है , दोनों ही तरह के परिवर्तन निहित होते हैं ।
  - विकास , जैविक , संज्ञानात्मक तथा समाज- सांवेगिक प्रक्रियाओं की परस्पर क्रिया से प्रभावित होता है ।
- 1) जैविक प्रक्रियाएँ : लंबाई का वजन , मस्तिष्क , हृदय एवं कंकड़ों का विकास इत्यादि ।
  - 2) संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ : ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त करने तथा इनसे संबंधित मानसिक क्रियाओं जैसे चिंतन , प्रत्यक्षता , अवधान , समस्या समाधान आदि से है ।
  - 3) समाज- संवेगात्मक प्रक्रियाएँ : एक व्यक्ति की दूसरे के साथ अंतः क्रिया में होने वाले और संवेग तथा व्यक्तित्व में होने वाले परिवर्तनों से है ।

\* विकास का जीवनपर्यंत परिप्रेक्ष्य :

- ☀ विकास जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात् विकास गर्भाधान से प्रारंभ होकर वृद्धावस्था तक सभी आयु समुहों में होता है ।





Date..... 2.....

- 2) विकास बहु - दिश है ।
- 3) विकास अत्यधिक लचीला या संशोधन योग्य होता है ।
- 4) विकास ऐतिहासिक दशाओं से प्रभावित होता है ।
- 5) विकास अनेक शैक्षणिक विधाओं के लिए एक महत्वपूर्ण सरोकार है ।
- 6) एक व्यक्ति परिस्थिति अथवा संदर्भ के आधार पर अनुक्रिया करता है ।

\* संवृद्धि, विकास, परिपक्वता तथा कमविकास :

संवृद्धि : शारीरिक अंगों अथवा संपूर्ण जीव की बढ़ोतरी को कहते हैं । इसका मापन अथवा मात्राकरण किया जा सकता है, उदाहरण के लिए ऊंचाई वजन आदि में वृद्धि ।

विकास : एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने संपूर्ण जीवन - चक्र में बदला रहता है एवं परिवर्तित होता रहता है ।

\* परिपक्वता : उन परिवर्तनों को इंगित करता है जो एक निर्धारित क्रम का अनुसरण करती हैं तथा प्रधानतः उस आनुवंशिक रूपरेखा से सुनिश्चित होते हैं जो हमारी संवृद्धि एवं विकास में समानता उत्पन्न करते हैं ।





Date.....3.....

क्रमविकास : प्रजाति - विशिष्ट परिवर्तनों को कहते हैं ।

\* विकास को प्रभावित करने वाले कारक :

- 1) आनुवंशिकता
- 2) परिवेश

• जीन प्ररूप : वास्तविक आनुवंशिक तत्व या व्यक्ति की आनुवंशिक विरासत या वंश परंपरा को जीन प्ररूप कहते हैं ।

• दृश्य प्ररूप : प्रेक्षणीय एवं मापन योग्य विशेषताओं के रूप में जिस प्रकार व्यक्ति का जीन प्ररूप अभिव्यक्त होता है उसे दृश्य प्ररूप कहते हैं ।

\* विकास का संदर्भ \*

यूरी ब्रान्फेनब्रेनर : विकास का परिस्थितिपरक दृष्टिकोण व्यक्ति के विकास में परिवर्तनीय कारकों की भूमिका पर अधिक बल देता है ।

\* विकासात्मक अवस्थाओं का समग्र दृष्टि :

कुछ व्यवहार प्रारूप तथा कुछ कौशल एक विशिष्ट अवस्था में अधिक आसानी से एवं सकलतापूर्वक सीख जाते हैं । व्यक्ति की ये उपलब्धियाँ विकास की उस अवस्था के लिए एक सामाजिक अपेक्षा बन जाती हैं । इन्हें विकासात्मक कार्य कहते हैं ।





\* प्रसवपूर्ण अवस्था : गर्भाधान से लेकर जन्म तक की अवधि को प्रसवपूर्ण काल कहते हैं ।

\* शैशवावस्था : —————> पौरीय विकास :

1) नवजात शिशुओं की पौरीय क्रियाएँ प्रतिकर्त : जो उद्दीपकों के प्रति स्वाभाविक रूप से विद्यमान अनुक्रियाएँ होती हैं से संचलित होती हैं। ये आनुवंशिक रूप से प्राप्त अतिजीवित तंत्र हैं तथा बाद के पौरीय विकास के लिए ये आधारभूत इकाइयाँ हैं ।

2) संवेदी योग्यताएँ : जन्म के मात्र कुछ घंटे बाद वे अपनी माँ की आवाज को पहचान सकते हैं ।

• नवजात शिशु कुछ उद्दीपकों जैसे, चोटों को अन्य उद्दीपकों की तुलना में देखना पसंद करते हैं ।

• छठे महीने तक इसमें सुधार होता है और लगभग एक वर्ष की उम्र तक इष्टि लगभग बड़ी के समान (20/20) हो जाती है ।

• संज्ञानात्मक विकास : नीन पियाजे ने इस बात पर बल दिया है कि बच्चे संसार के बारे में अपनी समझ की रचना सक्रिय रूप से करते हैं ।

\* शैशवावस्था : जीवन के प्रथम दो वर्ष के





Date.....5.....

दौरान बच्चा ज्ञानेन्द्रियों एवं वस्तुओं के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से देखने, सुनने, स्पर्श करने (वस्तुओं को) मुँह में डालने एवं पकड़ने के द्वारा इस संसार का अनुभव करता है।

• सामाजिकसंवेगात्मक विकास : शिशु जन्म से ही सामाजिक प्राणी होता है। एक शिशु परिचित चेहरों को भरणे के द्वारा माता-पिता की उपस्थिति के प्रति अनुक्रिया करता है।

\* आसक्ति : शिशु एवं उनके माता-पिता (पालनकर्ता) के बीच स्नेह का जो सांवेगिक बंधन विकसित होता है उसे आसक्ति कहते हैं।

\* बाल्यावस्था : शैशवावस्था की तुलना में पूर्व-बाल्यावस्था में बच्चे में संवृद्धि मंद हो जाती है। बच्चा शारीरिक रूप से विकसित होता है उसकी ऊँचाई एवं वजन में वृद्धि होती है, चलना, दौड़ना, कूदना सीखता है।

• बच्चे अच्छे एवं बुरे की अवधारणा भी सीखना प्रारंभ कर देता है, अर्थात् नैतिकता का बोध भी विकसित हो जाता है, अर्थात् नैतिकता का बोध भी विकसित हो जाता है। बाल्यावस्था के दौरान बालकों की शारीरिक क्षमता बढ़ जाती है, वे कार्यों को स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं।





• शारीरिक विकास : प्रारंभिक विकास की सिद्धांतों का अनुसरण करता है :

- 1) विकास शिरः पदभिमुख अर्थात् मस्तिष्क या शिर के क्षेत्र से पैर या निचले हिस्से तक अग्रसर होता है ।
- 2) संवृद्धि शरीर के मध्य से प्रारंभ होती है और बाद में ह्रस्व के अंगों की ओर बढ़ती है → समीप दूरभिमुख अंगों से पहले धड़ पर नियंत्रण प्राप्त करते हैं । प्रारंभ में विशु बस्तुओं तक पहुँचने के लिए पूरे शरीर को घुमाते हैं, धीरे-2 व चीजों तक पहुँचने के लिए अपनी भुजाओं को आगे बढ़ाते हैं ।

• पेशीय विकास : बाल्यावस्था के प्रारंभ के वर्षों में स्थूल पेशीय कौशलों के अंतर्गत भुजाओं एवं पैरों का उपयोग करना, तथा अधिक विश्वास तथा उद्देश्यपूर्ण ढंग से परिवेश में घुमना - फिरना सम्मिलित हैं ।

• संज्ञानात्मक विकास : बच्चे में वस्तु स्थायित्व के संप्रत्यय को सीखने की योग्यता उसे वस्तुओं को निरूपित करने के लिए मानसिक प्रतीकों का उपयोग करने में सक्षम बनाती है ।

• सामाजिक-सांवेगिक विकास : स्व-लिंग तथा नैतिक विकास बच्चों के सामाजिक सांवेगिक विकास के महत्वपूर्ण आयाम हैं ।





Date.....7.....

• एरिकसन के अनुसार: उनकी (बच्चों) स्वप्रेरित क्रियाओं के प्रति माता-पिता जिस प्रकार से प्रतिक्रिया करते हैं वह पहलुशक्ति बौध या अपराध बौध को विकसित करता है।

• नैतिक विकास: मानवीय क्रियाओं के सही या गलत के बीच अंतर करना सीखना।

### \* किशोरावस्था की चुनौतियाँ \*

अंग्रेजी का शब्द 'सडोलसेंस' लैटिन भाषा के शब्द 'सडोलसियर' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है।  
• परिपक्व रूप से विकसित होना।

• शारीरिक विकास :

• संज्ञानात्मक विकासात्मक परिवर्तन :

• एक पहचान का निर्माण करना :

• कुछ प्रमुख चिंतनः 1) मादक द्रव्यों का दुरुपयोगः  
2) आहार ग्रहण संबंधी विकारः

• प्रौढ़ावस्था : जो दायित्वों का निर्वहन करता है।

\* प्रौढ़ावस्था के मुख्य कार्य : प्रौढ़ जीवन की संभावनाओं को तलाशना तथा एक स्थाई जीवन की संरचना का विकास करना।





1) जीविका स्व कार्य : उम्र के 20वें तथा 30वें वर्ष के लोगों के लिए जीविका प्राप्त करना, व्यवसाय का चयन करना तथा एक जीविका किसित करना महत्वपूर्ण कार्य होता है।

2) विवाह, मातृपितृ स्व परिवार : वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने पर युवा वयस्कों को दूसरे व्यक्ति को समझना एवं एक दूसरे की पसंद, नापसंद एवं स्वचि को जानना इत्यादि के प्रति समायोजन स्थापित करना पड़ता है।

\* वृद्धावस्था। \*

वृद्धों को जिन चुनौतियों से समायोजन करना होता है उनमें सेवानिवृत्ति, विधवापन, बीमारी और परिवार में मृत्यु सम्मिलित हैं।

वृद्धावस्था में शक्तिहीनता का अनुभव एवं स्वास्थ्य तथा वित्तीय संपत्तियों का क्षीण होना, असुरक्षा एवं निर्भरता को जन्म देता है।



---

## About

---

### WELCOME TO GAINER ACADEMY

I am Pankaj Verma Welcome to Our Study Verse Learn Anything, Anywhere, Anytime. Improve your skills with our Tutorials. Unlock your potential and achieve success with us and Unleash your inner genius with our expert guidance.

We are offering a wide range of educational programs for all age groups and all standard. We have dedicated teachers for helping students to reach their full potential and also guide students of their journey to success.

---

we are also available on

---



[www.gaineracademy.in](http://www.gaineracademy.in)



GAINER ACADEMY



[gaineracademy@gmail.com](mailto:gaineracademy@gmail.com)



[gainer\\_academy](https://www.instagram.com/gainer_academy)

